NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

जीरा की वैज्ञानिक खेती

#लालू प्रसाद, [1]बद्री लाल नागर, [2]सुभाष चंद्र, [3]डॉ. शिवम् कुमार सिंह, [4]होमेश्वरी

परिचय:

जीरा खाद्य पदार्थों में मनमोहक सुगंध प्रदान करने वाली फसलों में विशेष फसल है इसका प्रयोग मसाले के रूप में छौंकने के रूप में रायता आदि में प्रयोग किया जाता है।

उत्पत्ति- जीरा की उत्पत्ति स्थान मुख्य रूप से मिस्र देश माना जाता है।

जलवायु- जीरा की फसल के लिए मुख्य रूप से ठंडी जलवायु अच्छी होती है इसकी सफल खेती के लिए 75 सेल्सियस वर्षा वाले क्षेत्र प्रयुक्त होते हैं यह रबी के ठंडे मौसम की फसल है इसके विकास के लिए दीर्घ प्रकाश अवधि की आवश्यकता होती है।

भूमि- जीरा की फसल के लिए अधिकतम जीवाश्म युक्त दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है लेकिन बलुई दोमट भूमि भी इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम होती है खेती की तैयारी के लिए सबसे पहले दो जुताई मिट्टी पलटने वाले हाल से करनी चाहिए तथा और तीन चार जुताई देशी हल की सहायता से कर कर पाटा चला कर मिट्टी को भुर भूरी करके खेत को अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए।

जातियां- जीरा की मुख्य रूप से दो प्रकार की जातियों में रंग के आधार पर बांटा गया है।

सफेद रंग की जातियां- यह जातियां समानता मसाले के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

काले रंग की जातियां- यह जातियां मुख्य रूप से काले रंग की होती है तथा औषधी के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

उन्नतशील जातियां- इसमें मुख्य रूप से आर एस के -1प्रजाति आती है।

आई ए आर आई द्वारा विकसित किस्में- एन पी डी 43, एन पी जे 126,149, सलेक्शन 7-3

गुजरात में विकसित की गई प्रजातियां- एम सी 43,एस 404

राजस्थान में विकसित की गई प्रजातियां- आई जे-19,209

खाद एवं उर्वरक-जीरा की खेती के लिए 250 से 300 कुंतल गोबर की खाद या कंपोस्ट खाद में बिखेर कर अच्छी तरह मिला देनी

#लालू प्रसाद, [1]बद्री लाल नागर, [2]सुभाष चंद्र, [3]डॉ. शिवम् कुमार सिंह, [4]होमेश्वरी,
#शोध छात्र सब्जी विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या(उत्तर प्रदेश)
[1]शोध छात्र आर ,वी ,एस ,के ,वी,वी ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
[2]शोध छात्र कृषि अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली(उत्तर प्रदेश)
[3]भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान वाराणसी
[4]शोध छात्रा जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर मध्यप्रदेश

चाहिए इसके अतिरिक्त 15 किलोग्राम नाइट्रोजन 10 किलोग्राम फास्फोरस 10 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से जीरा की फसल में प्रयोग करनी चाहिए।अरे अपनी बुद्धि के किसी भी चरण में पालिश को सहन नहीं कर सकती उन स्थानों पर

दूरी- जीरा को मुख्य रूप से पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेमी और पंक्ति से पंक्ति की दूरी30 सेमी रखते है

बुवाई का समय- जीरा की बुवाई मुख्य रूप से अक्टूबर माह में करते हैं।

बीज की मात्रा- जीरे की बुवाई तो दो प्रकार से की जाती है बीज की मात्रा अलग-अलग होती है छिटकमा विधि से 30 से 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की तरह से प्रयोग करते हैं कतार विधि करो में 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयुक्त करते हैं।

निकाई गुड़ाई- पौधों के बीच उगने वाले खरपतवारों को निकाई करके हटा देते हैं तथा साथ में हल्की गुड़ाई भी करना चाहिए क्योंकि इससे एक तो खरपतवार नष्ट हो जाते हैं और दूसरी भूमि जलधारण क्षमता बढ़ जाती है और उपज में वृद्धि होती है।

सिंचाई बुवाई के तुरंत बाद एक हल्की सिंचाई करना चाहिए इसके अब अलावा आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहना चाहिए इस प्रकार 5 से 6 सिंचाई की आवश्यकता इस फसल के लिए होती है।

पैदावार- बुवाई के लगभग 4 माह बाद फसल पककर तैयार हो जाती है फसल पकने के बाद कटाई करके बीज को अलग कर लेना चाहिए इस प्रकार एक अच्छी फसल में 10 से 12 कुंतल उपज प्राप्त हेक्टेयर प्राप्त होती है।

फसल सुरक्षा-

खर्रा- इसमें पौधे की पत्तियां तथा तने सफेद चूर्ण दिखाई पड़ने लगता है तथा पत्तियां पहले पीली पड़ने लगते हैं इसकी रोकथाम के लिए 600 मिलीलीटर डिनोकैप का 1000 लीटर पानी में मिलाकर घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

अल्टरनेरिया -इसमें पत्तियों पर धब्बे पड़ने लगते हैं इसकी रोकथाम के लिए 2 किलोग्राम कापर ऑक्सिक्लोराइड 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती खाने वाले कीट -यह कीड़े पौधों की मुलायम पत्तियां को खाकर फसल को नुकसान पहुंचाते हैं अत इनकी रोकथाम के लिए पांच प्रतिशत मैलाथियन धूल 20 किलोग्राम की दर से छिड़काव करना चाहिए।